

बनाए ताकि उनको अच्छा काम मिले, उनको कपड़ों की मार्केटिंग फेसिलिटी रहे और उनको कुछ ऐसी सुविधाएं दें ताकि उससे उनका जीवन चल सके। आज उनका जीवन चलाने में भी बहुत मुश्किल है। यह सारे भारत की समस्या है। आज एक राज्य में आन्ध्र प्रदेश या कर्नाटक या तमिलनाडु का नहीं, बुनकर लोग हर राज्य में हैं, हर मंडल में हैं, हर कंस्टीट्यूंसीमें हैं, हर जगह हैं। कहीं 10 हैं, कहीं लाख हैं, कहीं हजार हैं तथा कहीं करोड़ हैं। आज भारत में दस करोड़ बुनकर लोग हैं। आन्ध्र प्रदेश में 60 लाख बुनकर लोग इस वृद्धि के माध्यम से अपना जीवन गुजारते हैं। इसमें वूल है, सिल्क है, कॉटन है, टसर है। तरह-तरह का कपड़ा उत्पादन वह करते हैं। तो आपसे यह निवेदन है, सरकार से ज्यादा फायदा कराने के लिए इन गरीबों का न मुंह है, न कुछ है, मेहनत करते हैं, खामोश रहते हैं। कृपया सदन के हर राजनीतिक पार्टी से, हर सदस्य से मेरी यह प्रार्थना है, मेरा यह निवेदन है कि बुनकरों को बचाओं। धन्यवाद।

**Recent statement made by the Shahi Imam of Jama Masjid at
Ramlila grounds, Delhi**

श्री एस0 एस0 अहलुवालिया (बिहार) : सभापति महोदय, आपने बोलने का मौका दिया इसके लिए धन्यवाद। मैं एक अहम मुद्दा आपके सामने उठाना चाहता हूँ। 21 अप्रैल को दिल्ली के जामा मस्जिद के शाही इमाम अब्दुल्ला बुखारी ने रामलीला मैदान में एक मीटिंग बुलाई जिसका नाम दिया था मजहब बचाओं रैली। वहां उन्होंने भाषण के क्रम में जो कुछ कहा, मेरे मन में, छात्र जीवन से कोई भी किसी धर्म का मुखिया हो, अगुवा हो, नेता हो उसके प्रति मैं श्रद्धा रखता हूँ, एक इज्जत रखता हूँ। पर उनका भाषण सुनकर दुख हुआ और उनके शब्द जो थे वह दुर्भाग्यपूर्ण थे और विकृत वक्तव्य के रूप में उसकी व्याख्या दी जा सकती है। इस वक्तव्य की, इस भाषण की जितनी भर्त्सना की जाए मैं समझता हूँ वह कम होगी। उनके इस भाषण ने पूरे भारत के समाज के हर एक भारतवासी के दिल में अपार पीड़ा पहुंचाई है। महोदय, मैं एक राष्ट्रवादी सिख हूँ, अल्पसंख्यक समुदाय से आता हूँ। महोदय, मैं पूरी शिद्दत से महसूस करता हूँ कि सैय्यद बुखारी के इन वक्तव्यों में राष्ट्रद्रोह की बदबू आती है। महोदय, अफसोस की बात है वहां पर बहुत सारे दलों के नेता तो नहीं, पर मुस्लिम लीग के नेता उपस्थित थे और उनकी हाजरी में उन्होंने कहा, जिसे मैं कोट करता हूँ जो अखबारी में छपा है: "मैं भारतवर्ष में पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आई0 एस0 आई0 का सबसे बड़ा एजेंट हूँ। अगर सरकार में इतनी ताकत है तो मुझे गिरफ्तार करके देखले, इसके साथ-साथ इसका अंजाम भी देखले।"

महोदय, यह चेलेंज सरकार को नहीं है, यह चेलेंज हिन्दुस्तानियत को है। यह चेलेंज कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी और कच्छ से लेकर कोहिता तक के हर उस भारतवासी को है जो भारत मां की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति देने के लिए हर वक्त तत्पर है। यह चेलेंज उनकी शहादत को है जिन लोगों ने आई० एस० आई० के षड़यंत्र पर इस देश के लिए कुर्बानियां दीं। वे हजारों निर्दोष लोग जो इस षड़यंत्र के तहत मारे गए, वे हजारों हमारे बी० एफ० एफ० के जवान, सैनिक जवान औरसी० आर० पी०एफ० के जवान, पुलिस के जवान जो आई० एस० आई० के षड़यंत्र के तहत कभी आर० डी० एक्स के माध्यम से तथा कभी माईस बिछाई गई थी उसके माध्यम से मारे गए हैं उनको चेलेंज है। महोदय, एक अत्यन्त पवित्र स्थान जामा मस्जिद के सर्वोच्च धार्मिक नेता अगर कुछ हजार लोगों की भीड़ में खड़े होकर यह बात करते हैं तो यह नुकसान किस का कर रहे हैं ? वे भारतीयता का नुकसान तो कर ही रहे हैं, साथ ही वे उनका भी नुकसान कर रहे हैं जिनकी वह नुमाइंदगी करते हैं। भारत में मुस्लिम समाज का एक अच्छा स्थान है। यहां पर मुसलमानों को एक अच्छी नजर से देखा जाता है। मैं एक सिख हूँ, मैंने मुसलमान का शब्द और उसकी परिभाषा जब अपने धर्मग्रंथ गुरु ग्रंथ साहिब में पढ़ी तो मैं आश्चर्यचकित हो गया। महोदय, मुसलमानों के बारे में हमारे गुरु ग्रंथ में क्या लिखा है और उसकी परिभाषा क्या है, मैं कोट करता हूँ, गुरु नानक देव जी ने कहा है :

मेहर मसीह, सिदक मुसल्ला,
हक-हलाल-कुरान,
शील-सुन्नत, शर्म-रोजा,
हो बो मुसलमान
मुसलमान कहाबन मुश्किल।

मुसलमान कहलाना बड़ा ही कठिन है। पर गुरु नानक देव ही बड़े सुन्दर शब्दों में कहते हैं कि मुसलमान होना बड़ा मुश्किल है। मुसलमान वही है जो दया (मेहर) की मस्जिद और सिदक (मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता) के मुसल्ला को प्रति बिम्बित करता हो अर्थात् जिसके हृदय में दया हो और नैतिकता की जो प्रतिमूर्ति हो। हक और हलाल की कमाई ही जिसकी कुरान हो अर्थात् पवित्र कुरान से संदेश ग्रहण कर जो सदा हक और हलाल की कमाई का ही पक्षधर हो। शील ही जिसकी सुन्नत हो अर्थात् सच्चरित्रता ही जिसकी अनिवार्यता हो, शर्म रोजा अर्थात् दुष्कर्मों से विरक्ति ही जिसका रोजा यानी दैनिक संकल्प हो, वहीं मुसलमान है अन्यथा मुसलमान कहलाना बड़ा मुश्किल है।

महोदय, क्या यह जो रामलीला मैदान में भाषण हुआ, यह हुआ गुरु नानक जी की परिभाषा में परिभाषित होता है ? मैं समझता हूँ कि इस्लाम के लिए मादिरे वतन का जो देशद्रोही हो, उससे बड़ा अपराध, उससे बड़ा काफिर दुनिया में कोई हो ही नहीं सकता, जिसकी कुरान शरीफ़ परमीशन नहीं देता ।

महोदय, आज अगर सैय्यद बुखारी जैसे व्यक्ति अपने को मुसलमानों का प्रतिनिधि बता रहे हैं और साथ ही राष्ट्रद्रोह की बात कर रहे हैं, तो एक सिख होने के नाते मैं महसूस करता हूँ कि इन्होंने समाज के पाक दामन पर जो बदनुमा दाग लगाया है और कोशिश की है उसके लिए भले भी भारत का कानून इंडियन पीनल कोड और सीआरपीसी सजा न दे सके, पर आने वाली मुसलमानी पुश्तें, आने वाली हिन्दुस्तानी पुश्तें इसको बर्दाश्त नहीं करेंगे, कभी बर्ख़ोंगी नहीं ।

महोदय, दया और प्रेम का यह मार्ग राष्ट्रद्रोह नहीं अपितु मजहबी मिल्लत और कौमी एकता का पावन संदेश सिखाता है । जिस मुल्क में 'ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्मी' जैसी अजीम हस्तियों में आदमी को इन्सार होने की कला सिखाई हो, जिस देश में 'निजामुद्दीन औलीया' जैसे बुजुर्ग लेटे हों, जहां 'शेख फरीद' को गीतों से चमन में खुशबू हो, जहां 'बुल्लेशाह' फकीर हमें मुहब्बत के मायने समझाता हो, जिस देश में 'रसखान' के ये बोल हों :

मानुष हौं तो वही रसखान
 बसौं ब्रज गोकुल गांव के ग्वारन,
 जो पशु हौं तो कहां बस मेरो
 चरौं नित नंद की धेनु मझारन
 पाहन हो तो वही गिरि को
 जो धरयो कर छत पुरंदर धारन
 जो खग हौं तो बसेरो करौं
 नित कालिन्दी कूल कदम्ब की डारन ।

रसखान के इस दोहे को पढ़कर मौके के हिन्दुओं ने कहा कि इस एक मुसलमान पर जहार हिन्दू वारीये जा सकते हैं । पर आज वह मुसलमान कहां ? आज मुसलमान के जो नुमाईदे शाही इमाम अपने को कहलाते हैं, वह गर्व से कहते हैं कि मैं पाकिस्तान का ...**(व्यवधान)**...

श्री के० रहमान खान (कर्णाटक) : मैं यह कहना चाहता हूँ कि वह मुसलमान कहां, वह मुसलमान है ...**(व्यवधान)**... देखिए वह मुसलमान है। यह बात नहीं है कि शाही इमाम यह बात कहता है। ...**(व्यवधान)**... The Shahi Imam is not a representative of Muslims.

SHRI S. S. AHLUWALIA : Let me finish it. आप मेरी बात सुन लीजिए। आप मेरी बात सुन लीजिए। मैं किसी जनरल मुसलमान के बारे में नहीं कह रहा था। मैं वह बात विद्वद्ग कर रहा हूँ। ...**(व्यवधान)**...

श्री के० रहमान खान : वह कह रहे हैं कि वह मुसलमान कहां, यह गलत बात है। **(व्यवधान)**

श्री एस० एस० अहलुवालिया : मैंने विद्वद्ग किया है। मैंने विद्वद्ग किया, वह मुसलमान कहां, यह विद्वद्ग किया।

MR. CHAIRMAN : He has withdrawn it. उन्होंने विद्वद्ग कर लिया। अब आपका पूरा हो गया।

श्री एस० एस० अहलुवालिया : सर, मैं पूरा कर रहा हूँ। महोदय, यह देश वह है जहां 'मियाँमीर' जैसे मुसलमान फकीर ने हमारे धर्म के मक्का स्वर्ण मन्दिर की नींव रखी हो। यह वह देश है जहां अबदुर्रहीम खानेखाना ने अपने रौशन किरदार से दौर को अपनी रहनुमायी बख्शी। यह वह देश है जहां मंसूर ने अंग-अंग कटवाकर अनल-हक का राग छोड़ा। यह वह देश है जहां सरमद ने रुहानियम के फलसफे को, शहादत देकर हमें समझाया हो। यह वह देश है जहां मादरे वतन के लिए अशफाकउल्ला और डांडी खां जैसे मुसलमानों ने जानें कुर्बान की हों। यह वह देश है जहां अब्दुल हमीद जैसे जांबाज सिपाहियों ने खून की आखिरी बूंद के साथ सरहदों की रखवाली की हो। **(व्यवधान)**

श्री नीलोत्पल बसु (पश्चिमी बंगाल) : यह जो कह रहे हैं, यह रैलेवेंट नहीं है। **(व्यवधान)**

श्री एस० एस० अहलुवालिया : आपको क्या है ? अरे, कुछ सीख लीजिए। कुछ सीखने का मौका मिल रहा है। **(व्यवधान)** यह वह देश है जहां कैप्टन हनिफुद्दीन ने कारगिल की चोटियों को अपने खून से सींचा ...**(व्यवधान)**...

श्री के० रहमान खान : मुसलमान मुसलमान है। आप मुसलमान पर ...**(व्यवधान)**...

श्री एस0 एस0 अहलुवालिया : मैं अपना गुणगान नहीं कर रहा हूँ। मैं विरासत का गुणगान कर रहा हूँ। (व्यवधान)

श्री सभापति : आपका प्वाइंट हो गया है।

श्री एस0 एस0 अहलुवालिया : सर, मैं प्वाइंट पर आ रहा हूँ।

श्री सभापति : नहीं, आपका प्वाइंट हो गया है। (व्यवधान)

श्रीमती सरोज दुबे (बिहार) : सर, यह क्या कहना चाह रहे हैं, यह समझ में नहीं आ रहा है। (व्यवधान) पता नहीं क्या-क्या बयान दिया जा रहा है। (व्यवधान)

श्री सभापति : जो प्वाइंट आप रखना चाहते थे, वह हो गया है। (व्यवधान)

श्रीमती सरोज दुबे : उसके बारे में पता नहीं क्या-क्या बयान जारी हो रहा है। (व्यवधान)

श्री एस0 एस0 अहलुवालिया : मैं यही कहना चाहता हूँ कि, (व्यवधान)

श्री सभापति : बस हो गया। (व्यवधान)

श्री एस0 एस0 अहलुवालिया : मैं कनक्लूड कर रहा हूँ। (व्यवधान)

श्री मुनब्वर हसन (उत्तर प्रदेश) : आप बिल्कुल बेकार बात कह रहे हैं। (व्यवधान)

श्री एस0 एस0 अहलुवालिया : आपको समझ में नहीं आएगा। यह आपके लिए ओवर हैड ट्रांसमिशन है। (व्यवधान)

श्री सभापति : आपने अपनी बात कह दी है। बस हो गया। (व्यवधान)

श्री एस0 एस0 अहलुवालिया : क्या विरासत की बातें बेकार होती हैं ? मैं विरासत की बात कह रहा हूँ। (व्यवधान) क्या विरासत की बातें बेकार होती हैं ? (व्यवधान)

श्री सभापति : आपने अपनी बात पूरी कर दी है। (व्यवधान)

श्री एस0 एस0 अहलुवालिया : मैं कहना चाहता हूँ कि शाही इमाम जी ने जो अपने आपको पाकिस्तान का, आई0 एस0 आई0 का एजेंट बताया है, आज वह देश में क्या चाहते हैं ? (व्यवधान)

श्री मुनब्वर हसन : सभी मुसलमानों को आप एक तरह से ले रहे हैं। (व्यवधान)

श्री विजय सिंह यादव (बिहार) : यह क्या कह रहे हैं ? (व्यवधान)

श्री एस0 एस0 अहलुवालिया : मैं तो शाही इमाम का नाम ले रहा हूँ। (व्यवधान)

एक माननीय सदस्य : आप शाही इमाम के हैं क्या ? ...**(व्यवधान)**...

श्री एस० एस० अहलुवालिया : आप शाही इमाम की वकालत कर रहे हैं । ...**(व्यवधान)**... मैं शाही इमाम को बोल रहा हूँ । **(व्यवधान)**

श्री मुनब्वर हसन : * **(व्यवधान)**

श्री एस० एस० अहलुवालिया : सवाल जवाब करने से पहले ज़रा सोच लो कि क् या कह रहे हो ? **(व्यवधान)**

श्री मुहब्बर हसन : आप क्या कह रहे हो ? **(व्यवधान)** आप सोचकर बोलिए । **(व्यवधान)**

श्री एस० एस० अहलुवालिया : मैं सोचकर बोल रहा हूँ । आप भी सोचकर बोलिए । मैं इसकी कीमत देने के लिए तैयार हूँ । हरेक देशद्रोही के खिलाफ मैं आपका बुलन्द करूँगा । **(व्यवधान)** यह जो उन्होंने इस देश के गृह मंत्री के बारे में बात कही है, क्या यह लफ़्ज़ कहने के लायक हैं ? उन्होंने कहा कि * **(व्यवधान)** उन्होंने कहा है ।

श्री सभापति : क्या कहा है, मैंने नहीं सुना है । **(व्यवधान)**

श्री विक्रम वर्मा (मध्य प्रदेश) : उन्होंने कहा है **(व्यवधान)**

श्री संजय निरुपम (महाराष्ट्र) : उन्होंने कहा है कि * वह अपने शब्द वापिस लें । **(व्यवधान)**

श्री लक्खीराम अग्रवाल (मध्य प्रदेश) : इस तरह से यह देश कैसे चलेगा ? **(व्यवधान)**

श्री एस० एस० अहलुवालिया : उन्होंने कहा है । वह अपने शब्द वापिस लें । **(व्यवधान)** ऐसे यह देश कैसे चलेगा ? **(व्यवधान)** परमिट किया है । **(व्यवधान)**

श्री विक्रम वर्मा : आप बुखारी की तरफदारी करने की कोशिश कर रहे हैं । क्या आप बुखारी के आदमी हैं । **(व्यवधान)**

श्री एस० एस० अहलुवालिया : उनके संस्कार की बातें बताओं तो उनको अच्छा नहीं लगता । धर्म की बातें बताओं तो अच्छा नहीं लगता । क्या अच्छा लगता है — आपका गुणगान ? **(व्यवधान)**

एक माननीय सदस्य : मुसलमान की बात कर रहे हैं । **(व्यवधान)**

*Expunged as ordered by the Chair.

श्री एस0 एस0 अहलुवालिया : मुसलमान की बात नहीं, मैं धर्म की, संस्कार की, भारतीय संस्कृति की बात कर रहा हूँ। भारत का इतिहास बता रहा हूँ। (व्यवधान) जिन्ना साहब की जहनीयत ने मुल्क को तो बांट दिया पर दिलों को नहीं बांट सके। पाकिस्तानी जासूस होने का दावा करके शाही इमाम ने (व्यवधान)

श्री सभापति : आपने जो बात कहनी थी, वह कह दी है। (व्यवधान)

SHRI NILOTPAL BASU: Sir, for how long will he carry on like this?

SHRI S. S. AHLUWALIA: Let me conclude. I have seen for how long other Members in the House have expressed themselves.

Chairman: Please conclude now.

SHRI S.S. AHLUWALIA: I am concluding my speech, Sir.

SHRI K. RAHMAN KHAN: You are making a special mention, not a speech.*

श्री एस0 एस0 अहलुवालिया : अरे खान साहब, आप बैठ जाओ। Either you support the Shahi Imam or listen to me.

SHRI K. RAHMAN KHAN: Who are you to say to me to whom should I support?

MR. CHAIRMAN: Hon. Member, these words "either you support the Shahi Imam or listen to me", these are not the alternatives to be set in the House.

SHRI S.S. AHLUWALIA: Sir, I withdraw my words.

SHRI B.P. SINGHAL (Uttar Pradesh): The Chair is not being addressed to in the House. That is the tragedy.

श्रीमती सरोज दुबे : जो इस सभा का सदस्य नहीं हैं, उसके बारे में जिक्र क्यों हो रहा है ? (व्यवधान)

श्री एस0 एस0 अहलुवालिया : आपको क्या तकलीफ है ? (व्यवधान)

श्री सभापति : आप खत्म करिए।

श्री एस0 एस0 अहलुवालिया : जो मादरे वतन के साथ देशद्रोह कर रहे हैं, उसको इस्लाम गवाही नहीं देता है। वह इंसान बनने के लायक नहीं है। (व्यवधान)

1.00 P.M

श्री सभापति : आपने अपना प्वाइंट कह दिया फिर भी आप कन्कलूड नहीं कर रहे हैं ।

श्री एस० एस० अहलुवालिया : शाही इमाम ने अपने भाषण में रामलीला मैदान में कहा कि चट्टी सिंह पुरा में जो 35 निर्दोष लोगों की हत्या हुई है उसमें भारत सरकार की सेनाओं के हाथ हैं । महोदय, मैं इसका घोर विरोध करता हूँ । उन्होंने यह बात ठीक उसी भाषा में कही है जिस भाषा में पाकिस्तानी टी० वी० और रेडियो कहता है, प्रचार करता है । महोदय, मैं आपके माध्यम से अपनी बात निदा फाजली की एक नज्म से समाप्त करूंगा ।

बजी घंटियां ऊंचे मीनार गूंजे,
महकती हवाओं ने सुनहरी फिजाओं की पेशानीओं पर
रहमत के शफकत के पैगाम लिखे ।
वजू करती सुबहें
खुली कुहनियों तक मुन्नवर हुई,
झिलमिलाए अघेरे
भजन गाते आँचल ने
पूजा की थाली से बाँटे सवेरे ।
सुबह हुई बच्चों ने बस्ता उठाया बुजुर्गो ने पेड़ो को पानी पिलाया,
नये हादसों की खबर ले के बस्ती में अखबार आया ।
खुदा की हिफाजत के लिए पुलिस ने, "मुल्ला की ममस्जिद में", "पुजार के ममन्दिर में"
पहरा बिठाया,
खुदा इन मकानों में नहीं, लेकिन कहां था ?
वह बस्ती के हर दीवारों दर पर ।
वहीं जल रहा था, जहां तक धुआं था,

वहीं जल रहा था, जहां तक धुंआ था ।

ऐसी ही नापाक हरकतों के कारण यह कौमी जुनून उठता है । अगर ऐसे भाषणों पर अंकुश नहीं लगाया गया और रोका नहीं गया तो यह कौमी जुनून इस देश के टुकड़े-टुकड़े करने के लिए तैयार बैठा है ।

श्री सभापति : बस, आपका हो गया ।

श्री एस0 एस0 अहलुवालिया : महोदय, आपके माध्यम से मेरी गुजारिश है कि सरकार उन पर अंकुश लगाए । (व्यवधान) और जो दलों में बैठे हैं इन पर भी । इनको समझ में नही आ रहा है कि आई0 एस0 आई0 का पाकिस्तानी एजेंट, अभी-अभी चौबीस परगना में पकड़ा गया है । (व्यवधान) जिसने प्लेन को हाईजेक करने में मदद की थी ।

श्री सभापति : अब खत्म हो गया । Finished. Finished. Mr. Rajeev Shukla. Nothing will go on record. ..(Interruptions)... Now, nothing will go on record.

SHRI NILOTPAL BASU: Sir, you have to allow us.

SHRI K. RAHMAN KHAN: Sir, you have to allow us.

CHAIRMAN: I have first called him Later, I will caU you. Mr Rajeev Shukla.

श्री राजीव शुक्ल (उत्तर प्रदेश) : सभापति महोदय, जो विषय अहलुवालिया जी ने उठाया है, मेरे ख्याल से पूरा सदन और हर देशवासी चाहे हिन्दू हो या मुसलमान हो, जो बयान शाही इमाम ने दिया है उसको स्वीकार नहीं करेगा । और न ही इस पर कोई अपनी सहमति व्यक्ति करेगा । इसमें जो गंभीर बात है वह यह है जो कश्मीर के मुताल्लिक कही गई है कि इंडियन एजेंसी का हाथ था । एक तरफ फारूख अब्दुल्ला साहब विदेशी आयातित आतंकवादियों, ट्रान्स बोर्डर टेरिज्म से लड़ रहे हैं और दूसरी तरफ अगर कुछ लोगों के इस तरह के बयान आते हैं तो वह चिंतनीय है । लेकिन वहीं मैं रहमान साहब की बात से भी एग्री करता हूं कि शाही इमाम मुसलमानों के नुमाइन्दे नहीं हैं, यह साबित हो चुका है इस देश के कई चुनावों में । और यह बात बिल्कुल सही है । एक सबसे महत्वपूर्ण बात जो मैं यहां रखना चाहता हूं वह यह है कि इसके पीछे वहज क्या है, जैसाकि इन्होंने कहा है । धर्मस्थल विधेयक को लेकर अभी लोगों को इसका अंदाजा नहीं है कि यह मामला कितना गंभीर हो रहा है । नीचे-नीचे पूरे देश में धर्मस्थल विधेयक को लेकर जिस तरह अफशाहों का माहौल बन रहा है, जिस तरह भावनाएं भड़काई जा रही हैं, मुझे लगता है कि अगर ऐसे ही चलता रहा तो

तीन-चार महीने में ही यह विवाद अयोध्या जैसा रूप ले लेगा। हर पोलिटिकल पार्टी के लोग जो यहां बैठे हैं, अब इससे फायदा उठाने की कोशिश में हैं और अपने-अपने ढंग से इसका इन्टरप्रेशन करके जनता को गुमराह कर रहे हैं और यह समझते हैं कि धर्मस्थल विधेयक पर सरकार को एकदम स्थिति स्पष्ट कर देनी चाहिए, सारे अखबारों में विज्ञापन दिया जाना चाहिए कि यह विधेयक क्या है ? जिसे मुसलमान वोट लेने हैं वह मुसलमानों को भड़का रहा है। दूसरे लोग कह रहे हैं कि यदि यह चलता रहेगा तो इससे भाजपा को फायदा होगा। इस तरह दोनों तरफ से मुल्क को गुमराह किया जा रहा है इसलिए इस धर्म स्थल विधेयक की स्थिति स्पष्ट करनी चाहिए, इस पर सरकार का एक बयान आना चाहिए तथा अखबारों के जरिये जनता को बताना चाहिए कि यह विधेयक है क्या। लोगों को इस विधेयक के बारे में पता ही नहीं है और यह विधेयक सब पर लागू होता है। लोगों को पता नहीं है कि इसकी वजह से स्थिति बिगड़ रही है। इसलिए मेरा आपके माध्यम से सरकार से आग्रह है कि वह इस पर कुछ कार्रवाई करे।

SHRI NILOTPAL BASU : I just wanted to make one point.

MR. CHAIRMAN: It is already 10'clock now. Shall we continue till this is over?

SHRI NILOTPAL BASU: Sir, let us complete this work.

MR. CHAIRMAN: All right.

SHRI NILOTPAL BASU: Sir, I will take just two minutes. So far as Mr. Ahluwalia's contention is concerned, against statements which go against the basic fabric of the nation, basic unity and integrity of the nation, we are all one. But, while saying so, he has gone beyond. He has.... (*Interruptions*).

SHRI SANGH PRIYA GALTAM (Uttar Pradesh): He has withdrawn those words.

SHRI NILOTPAL BASU: Please let me speak on my behalf. Please do not burden yourself with what I am going to say. Please allow me to speak in my own words. The difficulty is this. Starting from that, they still allow their imagination to run riot. And there is nobody in this House to support the activities of the ISI. But, when we had asked the Government, the Central Government, the Home Minister, to come out with a white paper about the ISI so that the whole country could be specifically mobilised, the Government had assured us specifically in December. But, subsequently,

now, the Government is backtracking on that. At the end of the speech, he was trying to insinuate that Bengal ISI agents have been caught. We are proud of it. The Bengal Government has done it not only now. A number of times, they have been able to arrest very key operatives of the ISI. Unfortunately, we hear about the ISI activities, but the Central Government is failing to come out with specific facts about the ISI, on the basis of which the entire patriotic masses of this country can be mobilised. This is the problem with the politics of the party that Mr. Ahluwalia has joined now. They will talk in general terms, create situations where specific communities will be targeted, instead of targeting those very forces which are trying to play with the unity and integrity of this country.

SHRI K. RAHMAN KHAN: Sir,.....

MR. CHAIRMAN: What is the point?

SHRI K. RAHMAN KHAN: About Mr. Ahluwalia's.....

MR. CHAIRMAN: He has already withdrawn them.

SHRI K. RAHMAN KHAN: Not only on that. I would request you to give me two minutes' time.

MR. CHAIRMAN: For what purpose?

SHRI K. RAHMAN KHAN: Sir, I would like to say certain things. *(Interruptions)*. He has maligned the entire Muslim community.

MR. CHAIRMAN: No, no. Nobody has maligned the entire Muslim community. *(Interruption)*. Don't raise this thing. None of the Members has maligned the Muslim community. Nobody in the House has ever maligned the Muslim community.

SHRI K. RAHMAN KHAN: Mr. Chairman, Sir, I appeal to you to give me time. Certain clarifications are necessary. First of all, I would like to say that, the Shahi Imam is the Imam of a particular mosque. It is only a particular mosque. It has no significance of an all-India character. He is just the Imam of an individual mosque. He cannot be the leader of the Muslims. That is point No. 1. You cannot say that whatever he says reflects the opinion of the 15-crore Muslims of this country. *(Interruptions)*. You go through the details.

MR. CHAIRMAN: He has not said that.

SHRJ S.S. AHLUWALIA: I have not said that. Please don't try to please the Press. *(Interruptions)*.

SHRJ K. RAHMAN KHAN: What I would like to clarify is this. You have talked about Islam. You have talked about the qualities of Islam.

SHRJ S.S. AHLUWALIA: Certainty.

SHRJ K. RAHMAN KHAN: With regard to the issue of Shahi Imam, he has stated that he represents the entire Muslim community. He does not. *(Interruptions)*

SHRJ S.S. AHLUWALIA: No, no. I did not say that.

SHRJ K RAHMAN KHAN: You said it and then you withdrew it. *(Interruptions)*

SHRJ S.S.AHLUWALIA: No, no. Nobody is interested to listen to him.' *(Interruptions)*

SHRI SANGH PRIYA GAUTAM: You condemn Shahi Imam. *(Interruptions)*

MR. CHAIRMAN: Mr. Khan, you have made your point very clearly. Now, nothing more is required.

SHRI K RAHMAN KHAN: Sir, whatever is objectionable, that should go out of the record.

MR. CHAIRMAN: You have told this thing to him. He will himself look into it.

Now, the House is adjourned till two o' clock.

The House then adjourned for lunch at eleven minutes past one of the clock.

The House re-assembled after lunch at six minutes past two of the clock,
[The Deputy Chairman (Shri Md. Salim) in the Chair.]

SPECIAL MENTIONS - Contd

Strike by Postal Employees.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI MD. SALIM): Now, we will take up the remaining Special Mentions. Shri Satishchandra Sitaram Pradhan. Not present. Shri Manohar Kant Dhyani. Not present. Shri S. Viduthalai Virumbi.